॥ ओ३म् ॥

प्रभु से विनय

हे विधाता! वह समय किस काल में आएगा, जब वेद मन्त्रों का पाठ, प्रत्येक मानव, प्रत्येक देव कन्या के कण्ठ में होगा, जब माता गायत्री का महान् स्वरों में गायन गाया जाएगा। आज हम समय का परिवर्तन चाहते हैं। हे देव! हमारे समक्ष उस समय को प्रकट करो, जहाँ गम्भीर व्यक्ति हों, जहाँ प्रत्येक मानव, प्रत्येक वस्तु को विचारने वाला हो। हे विधाता! हमें उस समाज की आवश्यकता नहीं, जहाँ अभिमान हो, तथा अपने से बड़ा किसी को न मान रहा हो। हे विधाता! जब ऐसे ऐसे अभिमानी संसार में उत्पन्न हो जाएँगे तो उनका अभिमान आपके अन्तरिक्ष में रमण करेगा। यह प्रतीत नहीं कि वह अभिमान किस-किस मानव को नष्ट भ्रष्ट कर देगा। हे विधाता! हमें तो वे व्यक्ति चाहिए, जो निरभिमानी हो, विद्या से परिपक्व हों अर्थात् जिनके पास अनन्त विद्या हो। हे देव! हे मित्र! हे सखा! हम आपकी शरण में आए हैं। हमें उस महत्व को प्रदान करो, जिससे हम महान् बनें, विचित्र बनें, यौगिक बनें।

हे प्रभो! तू कल्याण करने वाला है। तू संसार को उज्ज्वल बनाता है, तेरी महत्ता इस संसार में ओत-प्रोत है। जहाँ हमारे नेत्र जाते हैं, वहाँ तुम्हारा ज्ञान-विज्ञान इतना अनुपम और विलक्षण है, कि जिसे ऋषि तो बहुत कुछ जान भी सकते हैं, परन्तु मानव तो हृदय से उच्चारण करता-करता संसार से चला जाता है। हे परमात्मन्! आपने इस संसार को रचाया है, इसका कल्याण करो, हम तेरी शरण में आए हैं, तेरी महत्ता चाहते हैं।

पूज्यपाद-गुरुदेव

अंक : 527 कुल पृष्ठ संख्या समग्र अंक : 602
वर्ष : 44 44 समग्र वर्ष : 51

अनुक्रम

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
1. प्रभु से विनय	पूज्यपाद-गुरुदेव	3
2. अनुक्रम		4
3. यज्ञमय जीवन से आत्मबल	पूज्यपाद-गुरुदेव एवम् महर्षि महानन्द मुनि जी	5-15
4. याग द्वारा देवत्व	पूज्यपाद-गुरुदेव एवम् महर्षि महानन्द मुनि जी	16-25
5. मन और प्राण	पूज्यपाद-गुरुदेव एवम् महर्षि महानन्द मुनि जी	26-38
6. ऋषियों के उद्‌गार		39
7. दान, पुस्तकों की सूची व प्राप्ति के स्थान तथा सूचना इत्यादि		40-42

श्रावणी पर्व

परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा और पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज की पावमानी प्रेरणा से रक्षाबन्धन के शुभावसर पर दिनाँक 18-8-2016, दिन बृहस्पतिवार को प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी लाक्षागृह, बरनावा में सामवेद ब्रह्म-पारायण महायज्ञ का आयोजन श्री गाँधी धाम समिति द्वारा आयोजित किया जा रहा है। आप सभी इस यज्ञ में अपने परिवार, सगे-सम्बन्धियों एवम् मित्रों सहित सादर आमन्त्रित हैं।

श्री गाँधी धाम समिति (पञ्जी.)

॥ ओ३म् ॥

यज्ञमय जीवन से आत्मबल

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परा से उस मनोहर वेदवाणी का प्रायः प्रसारण होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में उस मेरे प्यारे देव की महिमा का गुण–गान गाया जाता है। हमारे यहाँ आचार्यों ने उस प्रभु के सम्बन्ध में भिन्न-भिन्न प्रकार की उड़ान उड़ी है, भिन्न-भिन्न प्रकार का विचार विनिमय होता रहा है। आज का हमारा वेदमन्त्र यह कह रहा है कि वह जो मेरा देव यज्ञोमयी कहलाता है जिसका यज्ञोमयी शरीर (स्वरूप) माना गया है, वह मेरा देव कैसा विचित्र है जिसकी महिमा अनुपम मानी गई है। आज का हमारा वेदमन्त्र भिन्न-भिन्न प्रकार की प्रेरणा दे रहा है।

रथ का स्वरूप

मेरे प्यारे महानन्द जी भिन्न-भिन्न प्रकार की हमें प्रेरणा देते रहते हैं। आज उनकी प्रेरणा है कि याग के सम्बन्ध में कुछ अपना उद्‌गार प्रकट किया जाए। आज का हमारा वेदमन्त्र भी कुछ याग के सम्बन्ध में अपनी विवेचना करता चला जा रहा था और उच्चारण कर रहा था, हे यज्ञ! तू कैसा रथ है जिस पर होताजन विद्यमान हो करके वह रथ द्यौ-लौक में ले जा रहा है। हे अग्नेय! तू यज्ञों का प्रतिनिधि माना गया है। अग्नेय! तू यज्ञोमयी रमण करने वाला है, द्यौ-लोकों में इस यजमान के रथ को ले जा रहा है और **''शब्दम् ब्रह्मणा''** वह रथ में विद्यमान हो करके उसकी द्यौ-लोकों में स्थिति हो जाती है। वह कैसा

महान् रथ है! जिसके ऊपर यजमान विद्यमान हो करके द्यौ-लोक को जा रहा है।

महर्षि सोम ऋषि महाराज

मैंने कई काल में तुम्हें भिन्न-भिन्न प्रकार की विवेचनाएँ दी हैं। आज मैं तुम्हें एक ऋषि के द्वार पर ले जाना चाहता हूँ जहाँ एक-एक वेदमन्त्र मानव को रथी बना रहा है और मानव को जीवन की आभा दे रहा है। एक समय महर्षि सोमकृतिभानु अपने आसन पर विद्यमान थे क्योंकि वह उद्दालक गोत्रीय ऋषि थे और उन्हें एक वेदमन्त्र स्मरण आ रहा था और वह वेदमन्त्र यह कह रहा था, वेद की एक आख्यायिका यह कह रही थी कि यजमान रथ में विद्यमान होकर के, **यज्ञशाला रूपी जो रथ है,** उस पर विद्यमान हो करके द्यौ-लोक को जा रहा है। ऋषि इस वेदमन्त्र को विचारने लगा कि यह रथ कैसे बन सकता है! आज मैं इस रथ को कैसे जानूँ! यह विचार-विनिमय करते रहे अथवा वह उसमें रत्त रहे और विचराते रहे और वह यह अनुसन्धान करते रहे कि मैं इसको कैसे जानूँ। उन्होंने अपने आसन को त्यागा। उद्दालक गोत्रीय ऋषि के एक भ्रात थे। उनका नाम था सोम ऋषि महाराज और वह सोम ऋषि आश्रम को दोनों पति-पत्नी तृतीय स्वानम ऋषि महाराज वह भ्रमण करते हुए भयँकर वनों में पहुँचे और भयँकर वनों में वह तप कर रहे थे अथवा वह याग कर रहे थे। जब ऋषि महाराज याग कर रहे थे उनकी पत्नी सोम ऋषिवनित कहलाती थी। पति-पत्नी याग करते-करते उन्होंने कुछ विज्ञान की आभाओं में जाने के पश्चात् एक यन्त्र का निर्माण करने लगे। उस यन्त्र का समन्वय इस अन्तरिक्ष से लग गया। वह वायु अग्नि की तरंगों को ले करके अन्तरिक्ष में प्रवेश करती है और अन्तरिक्ष में जिसकी स्थिति हो जाती है। अन्तरिक्ष में वह शब्द हैं, वह चित्र हैं। उन चित्रों का शब्दों के सहित ऋषि पत्नी और ऋषि अपनी यज्ञशाला में स्वाहा कृतियों में रमण

करने वाली जो तरँगें थी उन तरँगों को वह अपनी यज्ञशाला में यन्त्रों में तरंगित कर रहे थे और उनमें नाना प्रकार के चित्र आ रहे थे। जो अन्तरिक्ष में रमण करने वाले अनेक पूर्वज थे अथवा पिता, महापिता थे जो इस संसार में शरीर रूपों में नही थे उनके चित्र यन्त्रों में दृष्टिपात आने लगे। वह कैसा विज्ञान मानव के समीप यज्ञोमयी रहा है? मुनिवरो! यजमान का रथ बन करके द्यौ-लोक को प्रवेश कर रहा है।

यज्ञोमयी जीवन

आज मैं कोई विशेष चर्चा प्रकट करने नहीं आया हूँ। क्योंकि मेरे प्यारे महानन्द जी भी दो शब्दों की कुछ विवेचना कर पाएँगे। परन्तु आज का विचार हमारा क्या? कि **हम सदैव अपने में अपने को दृष्टिपात करते रहें।** आध्यात्मिकवाद में, भौतिक विज्ञान अथवा भौतिक यज्ञ में अपने जीवन को समन्वय करते रहें जिस जीवन का समन्वय करने से हमारे जीवन की धाराएँ विचित्रतम बनती हुई अन्तरिक्ष में रमण करती रहती हैं। मुनिवरों! यह कैसा यज्ञ है यह ऐसा महान् कर्म है हमारे यहाँ हमने इससे पूर्व काल में तुम्हें यह प्रकट कराया कि हमारे यहाँ विष्णु एक याग कहलाता है। विष्णु कहते हैं पालन करने वाले को। वह जो पालन करने वाला है वह विष्णु है। वह याज्ञिक कहलाता है। हमारे यहाँ एक अग्निष्टोम याग कहलाता है। अग्निष्टोम का अभिप्राय–अग्नि कहते हैं जो प्रतिष्ठित रहती है और जो एक-दूसरे को अपने में धारण करता है वह उसकी प्रतिष्ठा कर रहा है। विचार-विनिमय क्या? वह ''ऋषि अमृताम् अभ्रिणी वृताम्'' वह जो अग्निमयी है वह नाना प्रकार की तरङ्गों को ले करके वायु-मण्डल में देवताओं को प्रसारित कर देती है। मुनिवरों! हम यज्ञोमयी अपने जीवन को बनाते रहें। **यज्ञ हमारा कर्म करना है। यज्ञ ही हमारा एक कर्म है जिससे मानव का जीवन महान् और पवित्र बनता है।** अब मेरे प्यारे महानन्द जी दो शब्दों की विवेचना करेंगे।

पूज्य महर्षि महानन्द मुनि जी के उद्‌गार

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! मेरे भद्र ऋषि-मण्डल! आज मेरे पूज्यपाद गुरुदेव एक अमृतमयी वाणी उच्चारण कर रहे थे जिससे मुझे यह प्रतीत हो रहा है कि इनकी अमृतमयी वाणी के **उद्‌गार जो हृदय से उत्पन्न होते हैं, वह उद्‌गार सब अन्तरिक्ष में ओत-प्रोत हो जाते हैं।** मेरे पूज्यपाद गुरुदेव विज्ञान की चर्चा करते हैं। आध्यात्मिकवाद की चर्चा प्रकट कर रहे हैं परन्तु आज मैं कोई विशेष पूज्यपाद को वाक्य प्रकट करने नहीं आया हूँ। केवल यह कि जहाँ हमारी यह आकाशवाणी जा रही है वहाँ एक याग पूर्णत्व को, सम्पन्नता को प्राप्त हुआ है। मेरा अन्तरात्मा प्रसन्न हो रहा था। हे यजमान तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। हमारे यहाँ उद्‌गार देने से ही जीवन की आभा बनती रहती है। हे यजमान! तेरे जीवन में प्रकाश रहना चाहिए। हे यजमान! तेरे द्रव्य का सदैव सदुपयोग होना चाहिए। क्योंकि जब द्रव्य का सदुपयोग गृह में हो जाता है तो उस यजमान की आयु दीर्घ बना करती है। मेरी यह सदैव कामना है, हे यजमान! तेरी आयु दीर्घ होनी चाहिए क्योंकि तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। यह मेरी सदैव कामना है और वह कामना क्या? कि यज्ञम् ब्रह्मणे यह जो द्रव्य है, जो श्री लक्ष्मी है इसका सदुपयोग होना चाहिए। जिन गृहों में द्रव्य का सदुपयोग होता है वह गृह महान् और पवित्र बनते हैं। वह गृहपति, गृहलक्ष्मी बन करके मानव के जीवन को महान् और प्रतिष्ठित बना देती है। मैं यह वाक्य इसलिए उच्चारण कर रहा हूँ, हे यजमान! मेरे जीवन में नाना प्रकार के यागों का चयन होता रहा है। पूज्यपाद गुरुदेव का तो वह काल था जिस समय कजली वनों से लाया जाता था। परन्तु वह समय नहीं रहा। मानव का समय परिवर्तित होता रहता है। समय की परिवर्तिता मानव के जीवन का परिवर्तन कर देती है और मानव की दशा द्वितीय बन जाती है। मैं इस सम्बन्ध में विशेष चर्चाएँ कोई उच्चारण नहीं कर रहा हूँ।

ऋषि-मुनियों की देन

मुझे स्मरण आता रहता है जब मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने एक समय महाराजा अश्वपति के यहाँ एक याग कराया। वह याग क्या था? वह वृष्टि याग था। जब यह चर्चाएँ हुयी कि वृष्टि नहीं हो रही है, अकाल हो गया है। पृथ्वी विष उगल रही है और सूर्य अपने तेज से इस पृथ्वी में अन्नाद को दग्ध कर रहा है और पृथ्वी के विष को पान करने वाला सूर्य अपने को अपने में धारण कर रहा है उस समय ऋषि-मुनियों के एक समूह में यह चर्चाएँ हुयीं कि कजली वनों से ऋषि-मुनियों को लाया जाए और अमृत की वृष्टि करानी चाहिए। उस समय ऋषि-मुनियों ने यही कहा कि महर्षि शृङ्गी जी को लाया जाए और उनके द्वारा याग होना चाहिए। मेरे पूज्यपाद का वह जीवन कितना महत्वदायक था? एक सौ अड़सठ वर्ष का उस समय अग्रीत चल रहा था। तपस्या में तल्लीन, अध्ययन में तल्लीन संसार की आभाओं का ज्ञान नहीं होता था। उस समय राजा ने ऋषि-मुनियों से प्रार्थना की कि तपस्वी को तपस्वी ही ला सकता है। मुझे भी स्मरण है मेरे पूज्यपाद गुरुदेव को कजली वनों से लाया गया और लाने के पश्चात् याग का आयोजन किया गया और यह याग हुआ। उस याग में ज्ञानी और वैज्ञानिक सब विद्यमान हुए और विद्यमान हो करके अश्वपति के जहाँ याग हुआ।

रूपान्तर

आज मैं वर्तमान की चर्चा कर रहा हूँ। यह जो समय चल रहा है यह इस समय ऐसा विचित्र बन गया है कि याग को पाखण्डता में शब्दों का प्रतिपादन भी करते रहते हैं। मुझे विचार आता रहता है राष्ट्र में जो कर्म की हीनता आ गई है, यागों की हीनता आ गई है, अश्वमेद्य याग होते थे। अश्वमेद्य यागों में अश्व को त्यागा जाता। जो राजा अश्व को अपने में धारण करता था, राजा उसको विजय करता

था। ज्ञान के द्वारा विजय करो, चाहे अस्त्रो-शस्त्रो के द्वारा विजय करो परन्तु विजय करने के पश्चात् स्वर्ण में मढा हुआ वह जो अश्व है उसको, राजा को अर्पित करने के पश्चात् वह याग करना अश्वमेद्य याग कहलाता था। मुझे स्मरण है मध्यकाल कुछ ऐसा आया महाभारत काल के पश्चात् कि यहाँ वाममार्गी बुद्धिमान कहने लगे और उन्होंने अश्व मेध याग के रूप का रूपान्तर कर दिया और रूपान्तर क्या किया कि अश्व के मांस की आहुति यागों में परिणत करने लगे। जब ऐसा होने लगा तो मैं यह कहा करता हूँ पूज्यपाद गुरुदेव से, हे भगवन्! जब अश्वमेध का अर्थ यह नहीं है और **मुक्ति का याग एक साधन है, देवपुरी में जाने का साध्य है** तो ऐसा क्यों? कि अश्व के माँस की आहुति देना। इसका अभिप्राय यह कि यह अज्ञान है। यह ऊर्ध्वा मार्ग नहीं हैं यह ध्रुवा में ले जाने वाला है। यह सूक्ष्मता बुद्धिमानों की अज्ञानता हो जाती है। यह जब अज्ञान आ जाता है तो ध्रुवा कर्म होने प्रारम्भ हो जाते है।

गो-घृत

मैं आज पूज्यपाद गुरुदेव को यह वाक्य उच्चारण करने आया हूँ कि यहाँ यागों का चयन भिन्न-भिन्न प्रकार का हो गया। मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव से यह कहा करता हूँ कि पुनः से यागों का चयन द्वितीय रूपों में परणित हो गया। आज मैं यह वाक्य इसलिए उच्चारण कर रहा हूँ पूज्यपाद गुरुदेव को कि आज यहाँ एक याग हुआ। मेरा अन्तरात्मा प्रसन्न हो गया। कल के दिवस में मैं राष्ट्रीयता में वैज्ञानिकों के मध्य में चला गया। जहाँ हमारा याग हुआ इसके उत्तर में दिशा कोण में एक राष्ट्र है। जब मैंने उस राष्ट्र में प्रवेश किया तो वैज्ञानिकजन इस चिन्ता में चिन्तित हो रहे थे कि जो संसार है आधुनिक काल के वैज्ञानिक पूज्यपाद! यह उच्चारण कर रहे हैं कि यह समय चलता रहा, जो समय चल रहा है यह ऐसा समय है कुछ काल

के पश्चात् वायुमण्डल इतना दूषित हो जाएगा कि श्वास लेते ही प्राणी नष्ट हो जाएगा। आज का वैज्ञानिक यह कह रहा है। उनके मध्य में यह चर्चाएँ हो रही हैं। वैज्ञानिक इसमें लगा हुआ है अब हम क्या करें? वैज्ञानिकों ने कहा है ऐसा एक गो-घृत है जिसको अग्नि में प्रवेश करने से, अग्नि में स्वाहा करने से वायु-मण्डल शुद्ध हो सकता है तो विचार आया कि यज्ञोमयी जो कर्म है, यज्ञ से जो सुगन्धि उत्पन्न होती है वह वायु-मण्डल में प्रवेश करती है। जो घृत अग्नि में प्रवेश करते है, वह वायुमण्डल का शोधन कर रहा है।

आधुनिक शिक्षित समाज

आधुनिक काल का जो वैज्ञानिक है वह जहाँ इस तथ्यों में लगा हुआ है वहाँ मानव को त्रास भी दे रहा है। नाना प्रकार का त्रास देता हुआ यहाँ जो शिक्षित समाज है वह इतना अकर्मठ बनता चला जा रहा है उसमें विज्ञान की इतनी त्रासता आ चुकी है, उसके द्रव्य में इतनी हीनता आ चुकी है वह अपने को आत्मवेत्ता स्वीकार नहीं करता। यह कैसा विचित्र मैं इस आधुनिक जगत् को दृष्टिपात कर रहा हूँ। आधुनिक जगत् का जो प्राणी है जितना शिक्षित समाज है वह इसमें लगा हुआ है कि याग जैसे कर्म को पाखण्ड कह रहा है और अपने को इतना हीन स्वीकार कर लिया है कि आत्मा का उसमें बल नहीं रहा। बल क्यों नहीं रहा है? क्योंकि यहाँ **आधुनिक काल का जो विज्ञान है यह अग्निमय कहलाता है।** जिस काल में अग्नि वाला विज्ञान प्रगति करता है उसी काल में मानव हीन बनता चला जाता है इसलिए अग्नेय यन्त्रों का निर्माण हो रहा है। आज एक वैज्ञानिक एक यन्त्र का निर्माण कर रहा है जिसको वायुमण्डल में त्यागने के पश्चात् वायुमण्डल इतना दूषित हो जाएगा कि श्वास लेने मात्र से प्राणी नष्ट हो जाएगा, प्राणी का ह्रास हो जाएगा।

आत्मबल

पूज्यपाद! यह जो आधुनिक जगत् है यह विज्ञान में इतना हीन बनता चला जा रहा है कि यह मानव के आत्मिक बल को नष्ट कर रहा है। आत्मा का बल ही सर्वश्रेष्ठ माना गया है। संसार में यदि कोई बल है तो वह आत्मा का बल है। आत्मा का बल वह बल कहलाया गया है पूज्यपाद गुरुदेव ने एक समय मुझे वर्णन कराया था कि महाराजा नहुष जब तपस्या करके इन्द्रत्त्व को प्राप्त हो गया, जब इन्द्र बन गया, इन्द्र बन जाने के पश्चात् महाराजा नहुष ने इन्द्राणी को यह सोचा कि यह मेरी पत्नि हो जाएगी तो उस समय वह दुःखित हुई और देवर्षि नारद के द्वार पर आई। देवर्षि नारद मुनि से प्रार्थना की इन्द्राणी ने कि हे भगवन्! महाराजा नहुष हमारे सतीत्व को नष्ट करना चाहते हैं और हमारा पति इन्द्र कारागार में स्थित हो गया है और स्वतः वह इन्द्र बन गया है भगवन् हमारा जीवन कैसे सुरक्षित रह सकेगा? देवर्षि नारद ने कहा हे इन्द्राणी तुम दुःखित न हो। आज जब महाराजा नहुष तुम्हारे द्वार पर आए तो उसे कहो कि ऐसी सवारी पर आओ जिस पर कोई न आया हो तो महाराजा नहुष की ऐसी सवारी को मैं युक्त कर सकता हूँ और तुम्हारे सतीत्व की रक्षा होगी। मेरे पूज्यपाद गुरुदेव ने मुझे वर्णन कराया। मुझे स्मरण है जब नहुष आया तो इन्द्राणी ने नमस्कार करके कहा कि हे प्रभु! हम आपकी इन्द्राणी बन सकती हैं परन्तु आप ऐसे वाहन पर आओ जिस वाहन पर कोई न आया हो। महाराजा नहुष ने वहाँ से गमन किया वह प्रसन्न हो करके चले और उन्हें देवर्षि नारद प्राप्त हुए। नारद मुनि ने कहा कहो राजन् इन्द्र विजय करने वाले आज कहाँ रमण कर रहे हो? उन्होंने कहा महाराज! मैंने इन्द्राणी को अपनाना है और ऐसे वाहन पर आना चाहता हूँ जिस पर कोई न आया हो? उन्होंने कहा, ऐसा वाहन तो चार ऋषि दण्डक वन में तपस्या कर रहे हैं, तुम इन्हें ले आओ। ऐसी तपस्वियों

की सवारी और ऐसे तपस्विओं का वाहन कोई नहीं बना सकता। कहते हैं महाराजा नहुष उसी समय ऋषि के द्वार पर पहुँचे। चारों ऋषि तपस्या कर रहे थे। श्रुतिकेतु, सामभानु, कवन्धि, त्रिष्टकातु इन चारों ऋषियों ने ऊर्ध्वा में एक वाहन बनाया। उस वाहन को ले करके ऋषि चलने लगे, गति करने लगे। राजा नहुष उस पर विद्यमान हो गए। पूज्यपाद गुरुदेव ने कहा आत्मा के सम्बन्ध में, कि जब वह चलने लगे तो उन्होंने सर्पगति को कहा तो उन दोनों ने कहा, अरे नहुष! तू सर्प हो जा तो कहते हैं कि उसी श्राप से एक मृत साँप वहाँ था, उसका जीवात्मा, नहुष का उस सर्प योनि में प्रवेश कर गया। प्रवेश कर गया क्योंकि उनके श्राप थे। मुनिवरों! उनकी आत्मा का बल था, शारीरिक बल नहीं था। आत्मा का बल था इसलिए **सर्वश्रेष्ठ सँसार में आत्मा का बल होता है।** उस समय नहुष ने कहा, हे ऋषियों! मैं महान् पापी हूँ परन्तु मेरा जीवन कैसे ऊँचा बनेगा? उन्होंने कहा, द्वापर के काल में महाभारत में अग्नि प्रदीप्त होगी और उस समय युधिष्ठिर महाराज का वन में जाना होगा और उस समय सरयू के किनारे जब महाराजा युधिष्ठिर आए तुम उत्तर प्रश्न करना तुम्हारा कल्याण होगा।

मेरे पूज्यपाद यह कहा करते हैं कि आत्मा का बल सर्वश्रेष्ठ बल कहलाता है। आत्मा में जो बलिष्ठता है वह कोई अवृताम नहीं। शरीर की बलिष्ठता भी है परन्तु आत्मा सर्वश्रेष्ठ माना गया है। पूज्यपाद गुरुदेव ने यह प्रकट कराया मुझे कि यह जो आधुनिक भौतिक विज्ञान है यह बुद्धिजीवियों की आत्मा को हीन बना देता है। आत्मा में हीनता आ जाती है। मैं यह कहता रहता हूँ कि आधुनिक काल के मानव में एक हीनता आ गई है वैज्ञानिक एक यन्त्र बना रहा है। **पातालपुरी में एक यन्त्र बन रहा है** वह यन्त्र वायु में त्यागा जाएगा तो प्राणी नष्ट हो जाएँगे। इस प्रकार की आभा मानव के विचारों में लगी हुई हैं। मैं यह कहता हूँ, हे भोले प्राणियों! यह यन्त्र जब बन जाएगा शरीर

अवश्य त्यागा जाएगा, इससे तुम इतने त्रसित क्यों हो रहे हो? तो आधुनिक काल का विज्ञान मानव को त्रास दे रहा है और त्रासी बन रहा है। इसलिए अपने पूज्यपाद गुरुदेव को मैंने यह चित्रण कराया है आधुनिक जगत् का जो विज्ञान आ रहा है, वैज्ञानिक यन्त्र बन रहें हैं, निर्माण हो रहा है। ब्रह्मास्त्र अग्नेय अस्त्रो का निर्माण हो रहा है। परन्तु यह विज्ञान ऐसा नहीं है जो मानव को त्रसित बना दे। मानव की आत्मा को हीनता में पहुँचा दे। इसलिए मानव को हीन नहीं बनना चाहिए। आत्मा में बलिष्ठता होनी चाहिए।

यज्ञमयी जीवन की प्रेरणा

अरे! जब समय आएगा, भविष्य को प्रभु के ऊपर त्याग देना चाहिए। भविष्य आएगा प्रभु के संरक्षण में वह रहता है पूर्व हम इतने त्रासी क्यों बन जाएँ? इसलिए मैं यह कहता रहता हूँ, हे भोले प्राणियों! हे यजमानों! तुम अपने जीवन को यज्ञमय बनाते चले जाओ। अपने जीवन के सौभाग्य को ऊँचा बनाते चले जाओ। आत्मा को बलिष्ठ बनाते चले जाओ, द्रव्य का सदुपयोग करते चले जाओ। सुरा और सुन्दरी दोंनो से दूर होने का प्रयास करो जिससे तुम्हारा जीवन महान् और आत्म बल बलिष्ठ हो करके तुम सागर से पार हो जाओ। पूज्यपाद गुरुदेव से अब मैं आज्ञा पाऊँगा। पुनः से मैं यह उच्चारण कर रहा हूँ हे यजमान तेरे जीवन का सौभाग्य सदा अखण्ड बना रहे, द्रव्य का सदुपयोग होता रहे। द्रव्य का दुरुपयोग न होते हुए, सदुपयोग होना चाहिए। मैं पूज्यपाद गुरुदेव से अब आज्ञा पाऊँगा।

पूज्यपाद-गुरुदेव

मेरे प्यारे ऋषिवर! आज मेरे प्यारे महानन्द जी ने अपने उद्गार दिए। उनके हृदय में विज्ञान, समाज और राष्ट्र के प्रति जो वेदना है वह ऐसी वेदना है कि वह विचित्र सी वेदना प्रतीत होती है जिसके

ऊपर हम कुछ टिप्पणियाँ भी नहीं कर पाते। आज मेरे पुत्र ने अभी-अभी कहा कि ''यज्ञोमयी कृतम देवस्याम्''। जहाँ मेरे प्यारे महानन्द जी आशीर्वाद, अपना उद्‌गार देते रहते हैं हे यजमान! वहाँ हमारा भी यही कर्तव्य बन जाता है। तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे और तेरे जीवन की मानवीयता मानवता में रमण करती रहे। द्रव्य देवताओं को अर्पित करना यह तेरे जीवन का स्वभाव रहे।

आज का हमारा यह वाक्य अब समाप्त होने जा रहा है। **आज के वाक्य उच्चारण करने का अभिप्राय क्या? कि यज्ञोमयी जीवन होना चाहिए और अपने जीवन को सुन्दर और महान् बनाते हुए इस संसार सागर से पार हो जाएँ।** आज का वाक्य समाप्त अब वेदों का पठन-पाठन होगा।

वेदपाठ. . . . . .

अच्छा भगवन्! आज्ञा

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः

दिनाँक : 30 सितम्बर, 1981
स्थान : ग्राम धनौरा, मेरठ

॥ ओ३म् ॥

याग द्वारा देवत्व

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परागतों से ही उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण होता रहता है जिस पवित्र वेदवाणी में उस मेरे देव परमपिता परमात्मा की महिमा का वर्णन आता रहता है अथवा उसके गुणों का हम अनुवादन करते रहते हैं। क्योंकि वह सर्वत्र हैं। इस प्रकृति के कण-कण में ओत-प्रोत हैं। यह ब्रह्माण्ड उसकी स्थली मानी गयी है अथवा उसका आयतन माना गया है। इसी प्रकार यदि संसार प्रभु का आयतन है तो यह ब्रह्माण्ड ब्रह्म का शरीर माना गया है।

आजका हमारा वेदमन्त्र जहाँ परमपिता परमात्मा की आराधना कर रहा है, जहाँ परमपिता परमात्मा के गुणों का अनुवादन कर रहा है वहाँ मेरे प्यारे महानन्द जी मुझे कुछ प्रेरणा दे रहे हैं इनकी तरंगे विचारणीय मानी जाती हैं। मेरे प्यारे महानन्द जी उच्चारण कर रहे हैं कि कुछ याग के सम्बन्ध में अपना विचार-विनिमय होना चाहिए। मैंने बहुत पुरातन काल में नाना प्रकार के यागों का चलन, नाना प्रकार के याग हमारे यहाँ परम्परागतों से ही ऋषि-मुनियों के मस्तिष्क में और क्रियात्मक होते चले आए हैं। मैंने बहुत पुरातन काल में, यह कहा था कि हमारे यहाँ प्रातः स्मरणीय जो प्रायः माताएँ होती है वह अपने बाल्य को याग में परणित करा देती हैं।

माता कौशल्या का याज्ञिक जीवन

बेटा! मुझे स्मरण आता रहता है त्रेता का काल। त्रेता के काल में तुम्हें याद होगा जब राजा दशरथ के यहाँ पुत्रेष्टि याग हुआ। पुत्रेष्टि याग के ऊपर माता कौशल्या ने और तीनों राज-लक्ष्मियों ने यह सँकल्प किया था कि हम याग करेंगी। हमारा जीवन याग है। परन्तु माता कौशल्या का यह सँकल्प बन गया। उन्होंने अपने पूज्य गुरुदेव याज्ञिक को जब दक्षिणा प्रदान करने लगीं तो इन्होंने दक्षिणा में यही कहा कि प्रभु! मेरा जीवन याज्ञिक हो, मैं अपने जीवन को याज्ञिक बनाना चाहती हूँ। तो आचार्य ने उसे आशीर्वाद दिया। तो मेरे प्यारे! माता कौशल्या के गर्भस्थल में राम जैसी पुनीत आत्मा का जब प्रवेश हो गया तो माता कौशल्या याग करती थीं। वर्चसो अग्नि की पूजा करती थी। आत्मा को चेतनित करने के लिए तपस्या करने लगीं। क्योंकि माता की यह कामना थी कि मेरे गर्भस्थल से पुत्र होना चाहिए तो याज्ञिक होना चाहिए। माता कौशल्या तपस्या में परणित हो गई अपने जीवन को उन्होंने क्रियात्मक बनाना प्रारम्भ किया। वह प्रातःकाल समिधाओं को ले करके जब अग्न्याधान करती थीं तो कहती थीं, हे अग्नेय! तू प्रकाश है, तू मेरे अन्तःकरण का प्रकाश है, तू मेरे अन्तःकरण का प्रकाश है। हे अग्नेय! तेरी ही ज्योति जब ऊर्ध्वा में रमण करती है। हे अग्नेय! तू सप्त जिह्वा वाली अग्नि है। प्रत्येक जिह्वा से तू सँसार का कल्याण करती है। माता कौशल्या उस अग्नि की आराधना करती रहती थीं। बेटा! मध्य समय आता तो कला-कौशल करती थीं। उसके बदले जो द्रव्य आता था उससे अपने उदर की पूर्ति किया करती थीं। राजा ने बहुत विचारा कि राजलक्ष्मी इस राष्ट्र के अन्न को ग्रहण करने लगे। तो माता कहती है, हे राजन्! मैं राष्ट्र के अन्न को ग्रहण नहीं कर सकती क्योंकि मैंने आचार्यों के समीप, बुद्धिमानों के समीप अग्नि को साक्षी करके मैंने प्रतिज्ञा की थी और वह प्रतिज्ञा क्या? कि मैं अपने जीवन को तपस्वी बनाऊँ और मेरे गर्भ से जन्म लेने वाला बालक भी

तपस्याचर होना चाहिए। मेरे प्यारे! राजा की एकोकी वार्ता को उन्होने श्रवण नहीं किया।

मुझे स्मरण है पुत्रो! जब मुझे वह काल स्मरण आता रहता है तो प्रायः ऐसा दृष्टिपात आता है जैसे कोई संन्यासी यज्ञशाला में विद्यमान है। वह प्रातःकालीन अग्न्याधान करतीं, सूर्य की किरणों के साथ अपने नेत्रों में ज्योति का प्रकाश अपने में ग्रहण करती थीं। जब बाल्य गर्भ से पृथक् हो गया तो माता कौशल्या प्रातःकाल याग करने लगीं। बालक को लोरियाँ देती रहतीं और वार्चोसि का पठन-पाठन चलता रहता। आत्मा वर्चोसि है, अग्नेय है, मानो अग्न्याधान हो रहा है। अग्नि का चयन कर रहे हैं समिधा के द्वारा। तो मेरे प्यारे! उस अग्नि के चयन को कौन कर रहा है? अग्नि का चयन माता कर रही है। बालक दृष्टिपात कर रहा है। हे मेरी माँ! तू कितनी भोली है। तू अपने जीवन को कितना कर्मठ बना सकती है। कितना प्रतिष्ठित बना सकती है। तेरे जीवन की धारा एक महान् बन सकती है। **माता कौशल्या ने बेटा! तीन वर्ष के बाल्य राम को याग की सर्वत्र भूमिका वर्णित करा दी थी और वह तीन वर्ष का बालक वेदों की ध्वनि गा रहा है, अर्थात् याग कर रहा है।** समिधा के द्वारा अग्न्याधान कर रहा है।

मुनिवरो! माता का कितना सहयोग है? माता अपने पुत्र को क्या बना सकती है? इसके सम्बन्ध में कुछ नहीं कहा जा सकता। इसलिए **हमारे आचार्यों ने कहा कि मानव को प्रातःकाल याग करना चाहिए।**

याग से वायु मण्डल का शोधन

हमारे यहाँ वैज्ञानिकों का युग था। एक समय मगध राष्ट्र में हम पहुँचे परन्तु महर्षि भारद्वाज, ब्रह्मचारी सुकेता, ब्रह्मचारिणी शबरी, ब्रह्मचारी श्वेतकेतु, ब्रह्मचारी कवन्धि, ब्रह्मचारी भारतकेतु आदि ऋषिवर विद्यमान थे। वह प्रातःकाल याग कर रहे थे। प्रश्न किया गया कि

महाराज! यह जो तुम याग कर रहे हो, एक समय एक स्थली पर तो घोषणा करते हो कि हम वैज्ञानिक हैं, विज्ञान के तथ्यों को जानते हैं। दूसरी स्थलियों में आप याग कर रहे हैं। महर्षि भारद्वाज मुनि ने कहा, हे ऋषियों! **मैं जो याग कर रहा हूँ यह विज्ञान का आदि स्रोत है।** विज्ञान में जो दुषितपन आता रहता है, वायुमण्डल को हम अशुद्ध बनाते रहते हैं, उसका शोधन करना हमारा कर्त्तव्य है क्योंकि याग का जो प्रारम्भ होता है वह यज्ञशाला से होता है। यज्ञशाला होनी चाहिए और विज्ञानशाला होनी चाहिएँ क्योंकि वैज्ञानिकों का कर्त्तव्य है कि वह धृत के द्वारा वायुमण्डल का शोधन करते चले जाएँ। जब ऋषि भारद्वाज ने ऐसा कहा तो मध्यान्तर ऋषि ने कहा हे भगवन्! क्या याग का इतना महत्त्व है कि विज्ञान के प्रभाव को, परमाणुवाद को समाप्त कर सकता है? ऋषि भारद्वाज ने कहा कि परमाणुवाद को समाप्त नहीं करना है परन्तु परमाणुओं का शोधन करना है अथवा अशुद्ध परमाणुओं को निगल जाता है, पवित्र जो परमाणु होता है। जैसे एक मानव क्रोधित हो रहा है। परन्तु एक मानव शान्ति दूत बन करके आता है। वह शान्ति प्रिय बेटा! क्रोधाग्नि को निगल जाता है और उसके हृदय में शान्तना की स्थापना कर देता है। यह क्या है? **अशुद्धता को समाप्त करना और शुद्ध वायुमण्डल को बनाना यह हमारा कर्त्तव्य है।**

यागों का चयन

बेटा! यह यागों का चयन हमारे यहाँ परम्परागतों से होता रहा है। मुझे स्मरण है बेटा! ब्रह्मचारी कवन्धि याग करता हुआ परमाणुओं का विभाजन कर रहा है। परमाणुओं का विभाजन करके सूर्य की किरण जब परमाणुओं को ले जाती है तो उन परमाणुओं को एकत्रित करके वह सूर्य की किरण के साथ सम्बन्ध कर रहा है। सूर्य की किरणों के साथ गमन करने वाला ऋषि, वैज्ञानिक अपनी आभा में रमण कर रहा है। मुझे स्मरण है, चाक्राणी गार्गी एक समय वनों में याग कर रही

थीं। एकान्त स्थली पर विद्यमान वह नित्यप्रति याग करती थी। उस याग की ध्वनि को श्रवण करने के लिए बेटा! मृगराज, सिँहराज आसन पर विद्यमान हैं। याग हो रहा है। चाक्राणी बेटा! गान गा रही है, साम-गान गा रही है, उद्गान गान गा रही है उद्गीत गा रही है, उद्गाता बन करके स्वर ध्वनियाँ हो रही हैं। उस ध्वनि को श्रवण करने वाले मृगराज, सिँहराज चरणों को स्पर्श करके जा रहे हैं। यह कैसा विचार है? अहिंसा परमो धर्मः यह वेद की ध्वनि है जो मानव को उद्गाता बना देती है, मानव को महान् बना देती है।

विचार-विनिमय क्या? बेटा! चाक्राणी ही क्या? जितने भी ब्रह्मवेत्ता हैं, ज्ञान का जिनके द्वारा भण्डार है, तपस्या में परणित होने वाले हैं उन्होंने याग को सर्वश्रेष्ठ माना है, पवित्र माना है। एक याज्ञिक बन करके विज्ञानशाला में याग कर रहा है। एक मेरी प्यारी माता अपने विचारों को ले करके पुत्रेष्टि याग कर रही है। पुत्र याग कर रही है, गर्भस्थल में विद्यमान होने वाले को माता मदालसा की भाँति तीन शब्दों का प्रतिपादन करा रही है। माता मदालसा कहा करती थी, अपने बालक को लोरी देती हुई, हे बालक, हे आत्मा! तू शरीर में रहने वाली आत्मा को शुद्धोअसि, बुद्धोअसि, निरंजनोअसि बना। शुद्ध, बुद्ध और निरञ्जन यह आत्मा के पर्यायवाची शब्द हैं अर्थात् यह आत्मा शुद्ध है, निरञ्जन है, अखण्ड रहने वाली है और बुद्धिमान है। यह तीन शब्द आत्मा के वाची कहलाए जाते हैं। जो माता अपनी लोरियों में बालक को इन तीन वाक्यों का प्रतिपादन करती है, व्याख्या करती है तो वह बालक ब्रह्मवेत्ता बनता है, उसके सँस्कार बन जाते हैं। जो सँस्करणीय बन जाता है और माता का गर्भाशय पवित्र बन जाता है।

मेरे प्यारे! आज मैं तुम्हें यह वाक्य इसलिए प्रकट कर रहा हूँ कि हमारे यहाँ यागों का चयन परम्परागतों से ही माना है। ऋषि-मुनियों ने इसकी प्रशँसाएँ की हैं। **परन्तु याग मानव के लिए एक मार्ग है**

जो याग के प्रकाश में हम मोक्ष की पगडण्डी को प्राप्त कर लेते हैं। बेटा! आज मैं विशेष चर्चा प्रकट करने नहीं आया हूँ। मेरे प्यारे महानन्द जी भी दो शब्दों का प्रतिपादन करेंगे। आजका विचार क्या? मुनिवरो! **प्रत्येक मानव को याज्ञिक बनना चाहिए और यागों में परणित होते हुए, अपने जीवन को महान् बनाते हुए चले जाएँ।** अब मेरे प्यारे महानन्द जी दो शब्दों की विवेचना प्रकट करेंगे।

पूज्य महर्षि महानन्द मुनि जी के उद्‌गार

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! मेरे भद्र ऋषि मण्डल! अभी-अभी मेरे पूज्यपाद गुरुदेव अमृत की वृष्टि कर रहे थे। इनका वाक्य चल रहा था कि याग वैज्ञानिक कर रहा है, याग माता कर रही है, याग राष्ट्र में होता है। परन्तु **मानव का जीवन भी एक याग है।** मैं अपने पूज्यपाद गुरुदेव को यह परम्परागतों से ही प्रकट कराता रहता हूँ कि हे मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! यह जो वर्तमान का काल है, यह बड़ा विचित्र काल है जहाँ मानव-मानव का हनन करने के लिए तत्पर है। आज जहाँ हमारी यह आकाशवाणी जा रही है–मुझे प्रसन्नताएँ होती रहती हैं जब प्रायः यागों का चयन होता रहता है। हमारी जहाँ आकाशवाणी जा रही है वहाँ एक याग की रचना अथवा एक याग की सम्पन्नता और याग में एक प्रतिभा कृति कहलाई।

मन्त्रों से वृष्टि

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव बहुत परम्परागतों की वार्ता है, एक समय राजा जनक के यहाँ याग हुआ था। उस याग को वृष्टि याग कहा गया और राजा जनक के यहाँ जब याग हुआ तो मेरे पूज्यपाद गुरुदेव को कजली वनों में से लाया गया और महामन्त्रों के उच्चारण के बाद वृष्टि हो गई। परन्तु समय-समय का एक गायन है, समय-समय की वार्ताएँ हैं। आज मैं उन कालों में जाना नहीं चाहता हूँ।

अशुद्ध आहार और व्यवहार

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! आजका राष्ट्र, आधुनिक जगत् का मानव याग जैसे कर्म को पाखण्ड कहता है। यह क्यों कह रहा है? क्योंकि मानव-मानव का शत्रु बन रहा है। मानव का आहार और व्यवहार अशुद्ध हो गया है। हे मेरे पूज्यपाद गुरुदेव! जहाँ राष्ट्र यह कहता था कि प्राणियों की रक्षा की जाए, जहाँ राष्ट्र कहता था 'अहिंसा परमोधर्म' को ले करके याग किए जाए, वहाँ आजका राष्ट्र कहता है कि प्राणियों का पालन किया जाए। पालन करके भक्षण किया जाए परन्तु आजका राष्ट्रवाद हिंसावाद का प्रतीक बन गया है। जहाँ पालन करने को कहता है वहाँ भक्षण करने को कह रहा है। अरे भोले राजन्! जहाँ तू पालन करता है, वहाँ भक्षण की वार्ता आती है, तो कहाँ चला गया तेरा वह राष्ट्रवाद? कहाँ वह मनु-सिद्धान्त चला गया, कहाँ भगवान् राम का यह राष्ट्र चला गया?

आधुनिक शिक्षित समाज

मेरे पूज्यपाद गुरुदेव आजका अधुनिक काल का जो अपने को शिक्षित समाज कहता है, वह कहता है मैं शिक्षा में पूर्ण हूँ, परन्तु वह अहिँसा का पालन न करता हुआ हिंसक बन रहा है। तो प्रभु! मुझे तो ऐसा प्रतीत होता है पूज्यपाद! कि थोड़ा समय रह रहा है कि यहाँ अग्नि प्रदीप्त होने जा रही है।

सौभाग्यशाली-गृह

परन्तु आज पूज्यपाद-गुरुदेव मैं यजमान को अपने उद्‌गार प्रकट करने आया हूँ कि हे यजमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे। तेरे जीवन की धाराएँ महान् बनी रहें और गृह में द्रव्य का सदुपयोग होता रहे। यह जो याग जैसा कर्म है मेरे पूज्यपाद-गुरुदेव ने तो कई काल में प्रकट कराया। यह याज्ञिक कर्म कहलाता है, जिससे

आत्मा में पवित्रता आती है और लक्ष्मी-वसुधा माँ का पूजन होता है। लक्ष्मी का पूजन होता है और उस लक्ष्मी का पूजन हो करके गृह पवित्र बनते हैं। जिन गृहों में लक्ष्मी का पूजन होता है अथवा वह देवताओं को अर्पित की जाती है लक्ष्मी। मेरे पूज्यपाद-गुरुदेव कहा करते हैं वह गृह सौभाग्यशाली होता है। वह गृह महान् कहलाते हैं क्योंकि द्रव्य का सदैव सदुपयोग होना चाहिए। जिन गृहों में द्रव्य का, लक्ष्मी माता का तिरस्कार होता है एक समय वह आता है कि माता उस गृह को त्याग देती है। वह लक्ष्मी से दूर हो जाता है। लक्ष्मी उस प्राणी से दूरी हो जाती है। तो परिणाम हमारे यह वाक्य उच्चारण करने का यह है कि हम यजमान को सदैव यह अपनी प्रेरणा देते रहते हैं हे यजमान! तेरे जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे और गृह में सदुपयोग होता रहे लक्ष्मी का।

पूज्यपाद-गुरुदेव द्वारा यागों का चयन

मेरे पूज्यपाद-गुरुदेव तो याज्ञिक कहलाए गए हैं। **इकत्तर प्रकार के कर्म-काण्डों के याग को जानते हैं।** परन्तु देखो कजली वनों से लाया जाता है याग के लिए। जैसे यज्ञ जन्मों में ओत-प्रोत रहने वाला हो। परन्तु वृष्टि याग, अग्निष्टोम् याग, पुत्रेष्टि याग, ब्रह्म याग, विष्णु याग, रुद्र याग, हिम याग, देवी याग, सम्पत्ति याग, श्रीकान्त याग, नाना प्रकार के यागों का वर्णन वैदिक साहित्य में आया। परन्तु **पूज्यपाद-गुरुदेव के द्वारा ऋषि आते, उन यागों का चयन करा-करा कर ले जाते।** परिणाम क्या? आज मैं प्रशंसा करना नहीं चाहता हूँ।

माताओं के लिए प्रेरणा

विचार-विनिमय यह कि आधुनिक काल कैसा है? आधुनिक काल का मानव, बाल्य कैसा बन गया है? आधुनिक काल की माताएँ कैसी बन गई हैं। हे माँ! जब तू कौशल्या बनेगी तो राम भी तेरे गर्भ से जन्म लेगा। परन्तु यदि कौशल्या नहीं बन पाएगी तो राम कहाँ से

आएगा। चेतन बनेगी तो कृतियों में आ जाएगा और हे माँ! तू भोली बनकर के अपने जीवन को सुचरित्रता में धारण कराती हुई ज्ञान की पोथी को ले करके चल। आयुर्वेद तेरे द्वारा होना चाहिए जिससे गृह को तू राष्ट्र की सम्पदा बन करके गृह को महान् बना सके। आज मैं विशेष चर्चा प्रकट करने नहीं आया हूँ। महाभारत के काल में पुत्रियों का जो तिरस्कार हुआ वह तिरस्कार अवर्णनीय कहलाता है। परन्तु हे माता! उसमें भी तेरी ही हीनता है। तेरे गर्भ से बालक जन्म लेता हुआ माता को ही कुदृष्टिपात करने वाला बने, यह तेरी ही सूक्ष्मता है। मेरे प्यारे वह माता का बालक, माता की रक्षा करने वाला बने। उसका भक्षक न बने। महाभारत के काल में भक्षक बन गया, रक्षक नहीं रहा।

आधुनिक काल का विज्ञान

परन्तु मैं आज पूज्यपाद-गुरुदेव से विशेष चर्चा न देता हुआ केवल यही कि आधुनिक काल का जो विज्ञान है, यह मानव को तिरस्कृत करता रहता है, परेशान करता रहता है। यह महा भ्रान्तियों में रमण करता रहता है। आधुनिक काल का विज्ञान मानव को भयभीत करता रहता है। नाना प्रकार की आभाएँ प्रकट कराता रहता है जिससे यह समाज निर्भय न रहे। यह हीनता को प्राप्त होता हुआ अपने को निष्क्रिय बनाने के लिए जा रहा है।

यजमान को आशीर्वाद

आज मैं विशेष चर्चा पूज्यपाद-गुरुदेव को प्रकट कराने नहीं आया हूँ। मैं आपको परिचय देने आया हूँ। केवल वाक्य यह कि हे मेरे पूज्यपाद-गुरुदेव! मैं यजमान को अपनी शुभ कामनाएँ प्रकट कराने के लिए आया हूँ कि इनके जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे और द्रव्य का गृह में सदुपयोग होता रहे। यही मेरे पूज्यपाद-गुरुदेव! हमारा वाक्य है। अब मैं आपसे आज्ञा पाऊँगा।

पूज्यपाद-गुरुदेव

मेरे प्यारे ऋषिवर! आज मेरे प्यारे महानन्द जी ने अपनी वेदनामयी चर्चाओं को प्रकट किया। इनकी वेदनाएँ बनी ही रहती हैं। कहीं राष्ट्र के प्रति, कहीं समाज के प्रति। परन्तु यह समाज और राष्ट्र परम्परागतों से ही चल रहा है। परन्तु **जो मानव शोधन करने वाला है, वह शोधन करता रहता है।** जो अशोधन करने वाला है वह अशोधन करता रहता है। परन्तु अग्नि प्रदीप्त जब होती है तो वायु-मण्डल दूषित हो जाता है। विचारों से दूषितपन आ जाता है। मुझे भी कोई विशेष चर्चा नहीं देनी है।

केवल हमें विचार यह करना है कि प्रत्येक मानव को याज्ञिक बनना चाहिए। प्रत्येक माता को याज्ञिक बनना चाहिए। और जहाँ मेरे प्यारे महानन्द जी यजमान को अपनी शुभ वेदना प्रकट कर रहे थे, मेरी भी कामना रहती है कि उनके जीवन का सौभाग्य अखण्ड बना रहे, महान् और पवित्रवत जीवन को प्राप्त होते रहें। यह आजका वाक्य अब समाप्त होने जा रहा है। कल समय मिलेगा तो शेष चर्चाएँ प्रकट करेंगे। आजका वाक्य समाप्त, अब वेदों का पठन-पाठन होगा।

वेदपाठ. . . . . .

अच्छा भगवन्! आज्ञा

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः

दिनाँक : 3 अक्टूबर, 1981
समय : प्रातः 10 बजे
स्थान : ग्राम नागौला, मेरठ

॥ ओ३म् ॥

मन और प्राण

जीते रहो!

देखो मुनिवरो! आज हम तुम्हारे समक्ष पूर्व की भाँति कुछ मनोहर वेदमन्त्रों का गुणगान गाते चले जा रहे थे। ये भी तुम्हें प्रतीत हो गया होगा, आज हमने पूर्व से जिन वेदमन्त्रों का पठन-पाठन किया। हमारे यहाँ परम्परा से ही उस मनोहर वेदवाणी का प्रसारण प्रायः होता रहता है, जिस पवित्र वेदवाणी में उस मेरे देव की महिमा का गुणगान गाया जाता है। क्योंकि वह परमपिता परमात्मा महिमावादी हैं। उस प्रभु की ही महिमा इस सर्वत्र ब्रह्माण्ड में ओत-प्रोत है। कोई भी वैज्ञानिक ऐसा मुझे प्राप्त नहीं हुआ है जिसका विज्ञान इतना महान् हो कि प्रभु के विज्ञान से उसकी सन्तुलना हो सके, क्योंकि उसका विज्ञान और ज्ञान सन्तुलना में नहीं आता। वह एक ऐसा महान् है, उसका विज्ञान इतना नितान्त है कि कोई भी मानव उसके विज्ञान को सीमा में नहीं ला सका है।

मैंने बहुत पुरातन काल में तुम्हें यह निर्णय देते हुए कहा था कि एक-एक परमाणु का विभाजन करने से सर्वत्र ब्रह्माण्ड का चित्रण उसमें वैज्ञानिक को दृष्टिपात हुआ है। उस परमाणु के विभक्त करने करने से यह प्रायः हमें प्रतीत होने लगता है कि उस प्रभु का ज्ञान और विज्ञान इतना महान् और नितान्त है। आज मैं तुम्हें विज्ञान के युग में ले जाना नहीं चाहता हूँ। आजका हमारा वेदमन्त्र कुछ हमें प्रेरणा दे रहा था और वह प्रेरणा क्या है? जो मानव के जीवन को उत्थान करने वाली है। मानव में एक विडम्बना सी उत्पन्न कर देती है। जब तक हम इस महिमा में रमण नहीं कर पाते तब तक हमारा विज्ञान

और ज्ञान प्रायः अधूरेपन ही में रहता है। आज मैं तुम्हें विशेष चर्चा प्रगट करने नहीं आया हूँ।

सृष्टिओं का जन्म

''यज्ञस्यः उद्रम भवितामि देवस्त्याम् लोकाः'' वेद का ऋषि यह कहता है कि सृष्टि के प्रारम्भ में प्रभु ने यह जगत् रचा, जब सृष्टि का प्रादुर्भाव हुआ तो एक सुन्दर सी यज्ञशाला का भी निर्माण किया और उस यज्ञशाला के भिन्न-भिन्न होतागण जब विद्यमान हो करके आहुति देते हैं उनका आकार बन करके अन्तरिक्ष में गति करता है और उसके गति करने के पश्चात् उससे वायुमण्डल का प्रादुर्भाव हो गया, वायुमण्डल में वह स्थित रहने लगा। यज्ञमय जो शब्द है वह अन्तरिक्ष में गति करने लगा। वायुमण्डल बन गया और उस वायुमण्डल से इन नाना प्रकार की सृष्टियों का जन्म हो गया। अब एक सृष्टि है, नहीं नाना सृष्टियाँ है। नाना सृष्टियाँ क्या हैं? जिस रचना से, जिस शब्द रूपी रचना से, शब्द में से यज्ञ का प्रादुर्भाव हुआ और वह शब्द यज्ञमय बन गया।

विज्ञान की उत्पत्ति

वह यज्ञ पितर यागी बन गया। परन्तु यजमान से कहने लगे एक समय ब्रह्मा, हे यजमान! तुम याग कर रहे हो। क्यों कर रहे हो? यजमान कहता है कि ''यज्ञाम् देवम् व्रतोऽसुमम् गल व्रतीः देवाः'' मैं प्रभु व्रती हूँ। यजमान कहता है मैं व्रती हूँ और मैं व्रती बन करके याग को जानना चाहता हूँ, कर नहीं रहा हूँ जानना चाहता हूँ। परन्तु **यह याग जाना नहीं जाता, यह याग जाना नहीं गया।** वैज्ञानिकों ने जब यह विचारा कि हम याग को जानना चाहते हैं, तो वैज्ञानिक भी पुत्रो! याग को नहीं जान सके। वैज्ञानिकों ने इसके ऊपर बहुत अनुसन्धान किया और उन्होंने यह विचारा कि हम याग को जानें। परन्तु

वह यज्ञमय, एक आभामय रह गया तो वह याग एक आभा के रूप में परणित होने लगा, उससे अश्वमेघ, **वाजपेय** और नाना प्रकार के यागों की रचना में विज्ञान आ गया और उसको जानने से विज्ञान उत्पन्न हो गया।

आभा और याग

आओ मेरे पुत्रो! मैं तुम्हें बहुत गम्भीरता में नहीं ले जाऊँगा। यह विषय बहुत गम्भीर बनता जा रहा है। परन्तु विचार यह देने के लिए आया हूँ कि हम परमपिता परमात्मा की आराधना करते हुए, उस आनन्दमयी आभा को जानते चले जाएँ जिस आभा को जानने के पश्चात् मानव के जीवन में नवीन-नवीन तरङ्गों का जन्म होता है और उन तरङ्गों में जब वह रमण करने लगता है तो उन्हीं तरङ्गो से मेरे पुत्रो! इस सँसार में जो गति आती है, विज्ञान में जो अन्तरिक्ष में नाना प्रकार के शब्द विद्यमान हो करके वायुमण्डल को, वायु को परिवर्तित कर देते हैं। तो मुनिवरो देखो! इसीलिए हमारे यहाँ वैदिक ऋषियों ने, आचार्यों ने यह कहा कि ''आगाम् देवत्तम् यागाः'' कि ये जो याग करने वाले, ये सदैव जागरूक रहते हैं।

यागों में दो प्रकार के याग हमारे यहाँ परम्परा से ही माने जाते हैं। एक याग वह है जिसको हम आध्यात्मिकवाद कहते है, एक याग है जिसे हम भौतिक याग कहते हैं। आध्यात्मिक-विज्ञानवेत्ता भौतिक के मार्ग से हो करके जाता है और जब तक आध्यात्मिक-विज्ञानवेत्ता भौतिक मार्ग से हो करके नहीं जाता इस आध्यात्मिकवाद में उसे सफलता प्राप्त नहीं होती।

मुझे स्मरण है उद्दालक मुनि का गोत्र, उद्दालक मुनि के गोत्र में नाना ऋषि हुए। परन्तु आज मुझे महानन्द जी प्रेरणा यही दे रहे हैं कि ''आगाम् देवत्तम् यागाः'' आज मुझे याग की प्रेरणाएँ प्राप्त हो रही

हैं। परन्तु देखो यहाँ क्रियात्मक याग कर्म करने वाले नाना ऋषि हुए। तुमने बेटा! किसी काल में विभाण्डक मुनि महाराज के दिग्दर्शन किए होंगे। ऋषि विभाण्डक मुनि महाराज भयँकर वन में विद्यमान हैं। ये त्रेता-काल में हुए हैं और महर्षि भारद्वाज मुनि के समकालीन हुए हैं। भारद्वाज और ये महर्षि विभाण्डक और सुणेत-कृतिका के पुत्र रावण के विधाता कुम्भकरण भी, ये तीनों विद्यमान हो करके याग करते रहे और याग में विज्ञान की सफलता को प्राप्त करते रहे।

महर्षि विभाण्डक मुनि महाराज और कुम्भकरण का सम्वाद

एक समय बेटा! ये तीनों वैज्ञानिक-रूप में विद्यमान थे। तो इन्होंने विज्ञान को जाना और नाना परमाणुओं के ऊपर अनुसन्धान किया। महाराजा कुम्भकरण ने विभाण्डक मुनि से यह प्रश्न किया कि महाराज! यह जो विज्ञान परमाणुवाद है इस विज्ञान से तो हम सफलता को प्राप्त नहीं हो सके, हम सफल नहीं हो सके। विभाण्डक मुनि बोले, तो तुम क्या जानना चाहते हो? उन्होंने कहा कि हम यह जानना चाहते हैं कि इस वायुमण्डल को हम कैसे परिवर्तित कर सकते है? मेरे पुत्रो! देखो! महर्षि विभाण्डक मुनि महाराज ने मन्त्र उच्चारण किया कि ''याज्ञानाम् देवत्तम् लोकाम् ब्रहेः वृत्तम् ब्रहीः कृतानि'' कि हे ब्रह्मपुत्र, निद्रा को विजयी करने वाले, कुम्भकरण को बेटा! निद्रा के ऊपर बहुत आधिपत्य था। वे छः-छः माह तक अज्ञातवास में रह कर अनुसन्धान ही करते रहते थे, परमाणुवाद के ऊपर उन्हें इतना आधिपत्य था। बेटा! मैं उसका वर्णन करने में भी इतना असमर्थ तो नहीं हूँ, परन्तु कर नहीं पा रहा हूँ। परन्तु विभाण्डक मुनि महाराज का, दोनों का उनका विचार-विनिमय होता रहा और उनको नाना प्रकार के परमाणुवाद के ऊपर बहुत आधिपत्य था।

महर्षि विभाण्डक मुनि महाराज ने एक समय कुम्भकरण से यह प्रश्न किया कि हे ब्रहेः व्रती! मैं ये जानना चाहता हूँ कि हमने श्रवण

किया कि एक राजा त्रेतकेतु नाम का राजा एक याग कर रहा है और याग करके वो अपने पितर लोक को जा रहा है। यह क्या है? मेरे प्यारे! कुम्भकरण ने कहा कि महाराज! वह जो राजा याग कर रहा है और पितरलोक को जा रहा है इसके दो स्वरूप हैं। एक याग से पितर-यागी बन रहा है, एक याग कर्म करने से पितरलोक को प्राप्त हो रहा है। अब पितर बनना और पितर लोकों को प्राप्त होना–ये दो वाक्य बन गए। ''यागानाम, पितरश्चतम देवोः पित्राः'' गृह में सन्तान को जन्म देना पितरयाग हो गया। विज्ञान के द्वारा अपने सूक्ष्म पितरों का दर्शन करना वो पितर लोकों को जाना हो गया। अब दो स्वरूप बन गए हैं। इसमें वेद के नाना मन्त्र हैं इस प्रकार के। मेरे प्यारे! विभाण्डक कहते हैं, हे राजन्। हे ब्रह्मेः व्रतम्! मैं ये जानना चाहता हूँ, विज्ञान की रीति जानकर यौगिकता के स्वरूप से, क्या वह जब पितर-लोकों में पहुँच गया तो कैसे पहुँचा? अब मेरे प्यारे! देखो, वह वैज्ञानिक और यौगिक अर्थों में, वह यौगिकता में पहुँच गए बोले, कि महाराज! मेरे विचार में तो यह आता है कि वो अपने योगाभ्यास के द्वारा पितर लोकों में मन और प्राण को ले गए और वे पितर लोकों में पहुँच गए। परन्तु देखो! उन्होंने कहा, विभाण्डक कहते हैं ''और गम्भीरता में पहुँचो।'' उनकी पत्नी उनके साथ और पितर-लोकों में जा रहे हैं।

पितर लोकों का विज्ञान

मेरे प्यारे! अब देखो, वे दोनों जब ये विचार करने लगे तो वे बोले कि महाराज! मैं इस विज्ञान तक नहीं पहुँचा। तब महर्षि विभाण्डक मुनि कहते हैं, हे वैज्ञानिकों, मेरे विचार में यह आता है कि पितर लोकों को जानो। हमारे यहाँ नाना ऋषि इस प्रकार के हुए हैं जो इस यज्ञ के द्वारा पितरलोक, पितरों के दर्शन करने वाले हैं। वाहन बना दिया है और वाहन में विद्यमान हो करके गति कर रहे हैं। मेरे

प्यारे! देखो यह बड़ा एक गम्भीर वाक्य बन गया है। अब ऋषि इसका उत्तर देने लगा विभाण्डक कि यजमान यज्ञ करता है, याग कर रहा है, अपने विचारों की दुरितानि विचारों की आहुति दे रहा है और दुरितानि विचारों की आहुति देता हुआ वह जो याग कर रहा है, उसमें जो साकल्य अग्नि में प्रवेश हो गए हैं। अब वह यजमान कहता है पत्नी से, हे देवो! आओ, अब हम याग करेंगे। अब वह देवी के समीप ''साकल्यम् देवत्याम्'' अग्नि में साकल्य परणित करने लगे। जब वो साकल्य परणित करने लगे अर्थात् अग्नि में तेजोमयी बन करके ''भस्माकृति'' वह भस्मीभूत बना रही है। वे साकल्य को भस्म बना करके सूक्ष्म बना रही है। उन परमाणुओं को वो एकत्रित कर रहा है और परमाणुओं को जब एकत्रित कर रहा है, उन परमाणुओं से एक **'त्रि-केतु-व्रण'** नामक एक परमाणु होता है **'मनोवंचनि'** परमाणु, अब दोनों परमाणुओं का उन्होंने मिलान किया। दोनों को मिलान करके, दोनों का संघर्ष हुआ तो उसमें से कुछ तरंगों का जन्म हुआ। उन तरंगों को जब सूक्ष्म दृष्टि से दृष्टिपात किया गया तो उन तरंगों में से एक चित्र कोई दृष्टिपात हो गया। अब वो वहीं स्थिर हो गए और उन परमाणुओं का मिलान करने लगे। अब नित्यप्रति याग करते, उन परमाणुओं को यन्त्रों में लाते और लाते-लाते मुनिवरो! उन्होंने एक यन्त्र का निर्माण किया। अब उस यन्त्र में उन्होंने अपनी जो आहुति देते थे और 'आहुति' जो शब्द अन्तरिक्ष में जाने लगा तो उसका चित्र उन्हें स्वयँ दृष्टिपात आने लगा, उन्होंने विचारा यह तो कोई वस्तु है, यह तो कोई विज्ञान है। आगे उन्होंने अनुसन्धान किया तो उन्हें मेरे प्यारे! देखो, कुछ और चित्र उनको दृष्टिपात होने लगे, उन्होंने वैज्ञानिक याग के द्वारा एक यन्त्र का निर्माण किया। उसमें उनके कुछ पिताओं के दर्शन होने लगे और जब उन्होंने यन्त्र के ऊपर विचार किया, निर्माण किया तो अपने पचासवें महापिता के दर्शन होने लगे। अब वह यजमान पितर लोक को जा रहा है, उसकी उड़ान पितर लोक में जा रही है।

मेरे प्यारे! और अनुसन्धान किया तो वे सौवें महापिता के दर्शन करके ऋषि मौन हो गए। मेरे प्यारे! वह कैसे हो रहा था दर्शन? क्योंकि प्रत्येक शब्द के साथ में मानव का चित्र और वो चित्र सहित जो शब्द हैं वह अन्तरिक्ष में ओत-प्रोत हैं। अन्तरिक्ष में से वैज्ञानिक जब अनुसन्धान करता है, याग के द्वारा, परमाणुओं के द्वारा चित्रावलियों का निर्माण करता है तो उसमें शब्दों के साथ में उस मानव के चित्र आने प्रारम्भ हो जाते हैं।

पाँच स्तम्भ

मेरे प्यारे, यह जो यज्ञमय शब्द है यह कितना वैज्ञानिक है? इसमें कितना विज्ञान है? परन्तु देखो! जब इसके ऊपर अनुसन्धान किया जाता है और गम्भीरता से अनुसन्धान करते हैं तो यह सर्वत्र ब्रह्माण्ड एक यज्ञशाला के रूप में दृष्टिपात आता है। जैसे मानव के जीवन के पाँच स्तम्भ माने गये हैं इसी प्रकार ब्रह्माण्ड के भी पाँच स्तम्भ माने गये हैं। तो ये पाँचों खम्भों वाला जगत् है—पञ्चमहाभूत हैं। पञ्च खम्भों वाला यह मानव शरीर जो पञ्च-ज्ञानेद्रियाँ कहलाती हैं। ये पञ्च महाखम्भ हैं जिनके ऊपर यह ज्ञान, विज्ञान और ब्रह्माण्ड स्थिर हो रहा है। तो इसके ऊपर हमें कितना अनुसन्धान करना है।

मानव को आध्यात्मिक विज्ञान की प्रेरणा

विचार-विनिमय यह करना है कि मानव के लिए प्रभु ने कितने कार्य में इसको रत्त कर दिया है। मानव को कितना रत्त रहना चाहिए वाणी को अनुसन्धान करने में। क्या इसके मन को कोई शान्ति प्राप्त हो सकती है? क्या विलासिता आ सकती है इसके मन में? कदापि नहीं आ सकती। क्या इसके मन में एक-दूसरे को नष्ट करने की भावना भी नहीं आती है। यदि वो अनुसन्धान करने वाला है और यदि वह अनुसन्धान ही नहीं करता, इस पञ्च खम्भों वाले इस अपने ही गृह को नहीं जानता तो मेरे

पुत्रो! यह सँसार मानो एक केवल खिलवाड़ हो रहा है। वैज्ञानिकजनों को समय प्राप्त नहीं होता। दार्शनिकों को भी प्राप्त नहीं होता। परन्तु आलस्य और प्रमाद वादियों को न ज्ञान होता है, न प्रकाश होता है, उनके जीवन में रात्रि होती है। मेरे प्यारे! देखो, ग्लानि बन जाती है। भय की उत्पत्ति हो जाती है आलस्य और प्रमादियों को।

जो मानव अनुसन्धानवेत्ता होता है, जो मानव दार्शनिक होता है, दर्शन के ऊपर चिन्तन करने वाला होता है, वह प्रभु का विश्वासी होता है और जहाँ प्रभु होता है, वहीं वह होता है। प्रभु के शरण में जा करके वह मानव भयभीत नहीं होता भय उससे दूर हो जाता है। परन्तु देखो जब हम यह विचार और भी गम्भीरता से करते हैं तो यह प्रभु का अमूल्य जगत् है। मेरे पुत्र ने कई कालों में कहा था, कि यह सँसार बड़ा विचित्र है। क्या आज से ही विचित्र है, परम्परा से ही विचित्र है। जहाँ रजोगुण, तमोगुण हैं, वहीं विचित्रता हैं। जहाँ तीनों गुण विद्यमान हैं वहीं तो विचित्रता आएगी। वहीं तो नाना प्रकार की तरँगे उत्पन्न होंगी और जहाँ केवल सत्य ही सत्य रह जाता है वहाँ तमोमयी तरगें समाप्त हो जाती हैं।

मेरे पुत्रो! विचार-विनिमय क्या? आज मैं तुम्हें कोई विशेष चर्चा प्रकट करने नहीं आया हूँ। केवल तुम्हें यह परिचय देने के लिए आया हूँ प्रत्येक मानव को इस सँसार में वैज्ञानिक बनना चाहिए और वैज्ञानिक भी आध्यात्मिक विज्ञान में। क्योंकि आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता जो मानव होता है, जो आध्यात्मिकवादी बन जाता है, उस मानव के जीवन में प्रकाश आ जाता है और जब प्रकाश आ जाता है तो वहाँ निद्रा नहीं आती है, वहाँ रात्रि नहीं आती, वहाँ अज्ञान नहीं रहता, जब प्रभु के राष्ट्र में चला जाता है। प्रभु के राष्ट्र में पुत्रो! जब रात्रि नहीं होती तो मृत्यु भी नहीं होती और जब मृत्यु नहीं होती तो अज्ञान भी नहीं होता और जब अज्ञान नहीं होता तो मृत्यु भी नहीं होती और जहाँ

मृत्यु नहीं होती है वहाँ भय क्यों होने लगा। तो मेरे पुत्रो! हमें प्रभु के राष्ट्र पर विचार-विनिमय करना है। यह सँसार तो परम्परा से ही रजोगुण, तमोगुण से ही बन्धा हुआ नृत्य कर रहा है। परन्तु आज से नहीं परम्परा से ही। कहीं देवासुर सँग्राम हो रहा है, कहीं एक राष्ट्र दूसरे को नष्ट कर रहा है, कहीं भौतिक विज्ञान विशेष बलवान हो गया है तो वह विनाश को प्राप्त हो गया। परन्तु वही विज्ञान आध्यात्मिकवाद में परणित हो गया है तो वह प्रकाश में चला गया। विज्ञान का सदुपयोग उसमें हो गया है। परन्तु विचारना यह है कि हमें मानव को अपने कार्य में कितना व्यस्त रहना है। मानव को इस अपने मनीराम को सान्तवना नहीं देनी है। ये जब सान्तवना को प्राप्त होता है तब ही यह मानव की मृत्यु ले आता है, मानव की वहीं मृत्यु हो जाती है।

एक वाक्य मुझे स्मरण आ गया पुत्रो! जो मैंने बहुत पुरातन काल में भी प्रगट किया था। एक समय एक अधिराज थे। एक राजा के यहाँ एक सेवक पहुँचा। राजा ने कहा, अरे तुम कौन हो? महाराज! मैं सेवक हूँ। क्या तुम सेवा करना चाहते हो? उसने कहा कि महाराज! मैं सेवा करने के लिए आया हूँ। क्या वेतन लोगे? उसने कहा मैं कोई वेतन नहीं लूँगा। मेरी एक प्रतिज्ञा है वह आपको पूर्ण करनी होगी। राजा ने कहा क्या प्रतिज्ञा है? कि जिस समय मुझे कार्य प्राप्त नहीं होगा उसी समय मैं आपको मृत्यु को प्राप्त करा दूँगा। उन्होंने कहा ये तो बहुत प्रिय है। राजा ने स्वीकार कर लिया। अब बेटा! राजा कार्य उच्चारण करता और कार्य होने लगा। अब कुछ ही समय में राजा के यहाँ कार्य देने के लिए सूक्ष्मता आ गई। अब राजा को अपना स्वास्थ्य बड़ा प्रिय था। अब मृत्यु के भय से मुनिवरो! देखो! स्वास्थ्य भी नहीं रहा। वह भयभीत होने लगा, उस सेवक से भयभीत थे, मृत्यु दण्ड नहीं चाहता था राजा। एक समय कोई बुद्धिमान पुरुष प्राप्त हुआ। उसने कहा, अरे राजन्! तुम्हारा स्वास्थ्य तो बड़ प्रिय था। तुम कैसे

बन बए हो? उन्होंने सब गाथा उस बुद्धिमान से वर्णन की। वे योगेश्वर थे, उन्होंने कहा कि महाराज! मैं मृत्यु से कैसे जीवित रह सकूँगा? उन्होंने कहा तुम उसे अपने व्यक्तिगत कार्यों में क्यों लगा रहे हो? उसे सँसार के कार्य में परणित कर दो। मेरे प्यारे! देखो वह सँसार का क्या कार्य? ''कर्म ब्रह्मे कृताम्'' सँसार का भी नहीं, तुम्हें इतना ज्ञान हो तो देखो, एक दण्ड पृथ्वी में स्थापित करो और उससे कहो कि इस पर ऊर्ध्व में, ध्रुव में, ऊर्ध्व में, ध्रुवा में जाओ। राजा ने वाक्य स्वीकार कर लिया और उसने अपनी राज्य-स्थली पर एक दण्ड पृथ्वी में स्थापित कर दिया और मुनिवरो! उससे कहा सेवक तुम इस पर आओ जाओ, गमन करते रहो। मेरे प्यारे! उन्होंने कहा, अच्छा भगवन्! तो उस पर गमन करने लगे और उससे छुटकारा कहाँ सेवक को प्राप्त होता था। मेरे प्यारे! राजा उसकी मृत्यु से बच गया, मृत्यु नहीं होने दी।

मेरे प्यारे! वह सेवक कौन है, राजा कौन है, बुद्धिमान कौन है? इसके ऊपर विचारा किया जाए। बेटा! राजा तो यह शरीर है और बुद्धिमान इसमें बुद्धि है, ज्ञान है परन्तु यह जो मन रूपी सेवक ऐसा विचित्र है तो उसने कहा कि तुम यह जो प्राण रूपी दण्ड है, इस प्राण-रूपी दण्ड पर गमन करते रहो। मेरे प्यारे! **मन और प्राण का मिलान ही मुक्ति कहलाती है,** मन और प्राण के मेल को योगी कहते हैं। मन और प्राण के मिलान को वैज्ञानिक कहते हैं। मन और प्राण के मिलान को ही सृष्टि-चक्र को जानना कहते हैं। मन और प्राण की आभा को जानना ही सँसार में पितर लोकी बनना है। बेटा! जब एक सूत्र है और उस सूत्र में यह मन रूपी सेवक कटिबद्ध हो जाता है, एकाग्र बुद्धि होने पर मानव बुद्धिमान क्या योगेश्वर बन जाता है, वह विवेकी बन जाता है, उसे 'क्रोध अब्रहेः' और भी नाना प्रकार की मात्रा नहीं आती।

विचार-विनिमय क्या मेरे पुत्रो! जो मानव इस सँसार में अपना कल्याण चाहता है, याग चाहता है, अपनी मानवीयता को महान् बनाना

चाहता है, वह मन रूपी सेवक को प्राणस्थली पर ओत-प्रोत करा देता है। मुनिवरो! देखो वह 'अब्रहाः' उसी से ज्ञान का प्रादुर्भाव होता है। तो विचार-विनिमय क्या? मेरे प्यारे! आज का हमारा विचार यह कि हमारे आध्यात्मिक विज्ञानवेत्ता, यहाँ इस भौतिकवाद के मार्ग को ही करके आध्यात्मिकवाद में प्रवेश करता है। **यह मन का जानना, प्राणों का जानना यह मुनिवरो! देखो, भौतिकवाद है। पञ्च-महाभूत इसी से कटिबद्ध हैं और इसको जान करके आध्यात्मिकवाद में प्रवेश करता है।**

मुनिवरो! देखो, मेरे प्यारे महानन्द जी ने मुझे कई काल में प्रकट करते हुए कहा था। आज मैं पुनः से 'यज्ञम् ब्रहेः कृताम्' मेरे प्यारे महानन्द जी कुछ उच्चारण करना चाहते हैं दो शब्द।

पूज्य महर्षि महानन्द मुनि जी के उद्‌गार

'त्रिवर्धाः मयाः कृतम् देवाः नमोः हिरण्यम् देवाः'

मेरे पूज्यपाद गुरूदेव! भद्र ऋषि मण्डल! मेरे पूज्यपाद गुरूदेव अभी-अभी आध्यात्मिकवाद के मर्म की चर्चाएँ कर रहे थे। इनका आध्यात्मिकवाद तो परम्परा से ही रहता है। जिस स्थली पर हमारी यह आकाशवाणी का प्रवेश है, वहाँ एक याग की प्रतिभा है। आज मेरा आत्मा प्रसन्नता युक्त हो रहा था। कैसा प्रिय याग? मैं अपने विचारों से यह उच्चारण करने आया हूँ। मेरी सहानुभूति रहती है यागों में यजमान और उद्‌गान गाने वाले ब्राह्मण पर और यजमान उनका आयु दीर्घ होना चाहिए, आयु में बलवती होनी चाहिए। हे यजमान! तू अपनी अन्तरात्मा को उज्ज्वल बनाने में सदैव तेरी भावना रहनी चाहिए। सँसार तो परम्पराओं से ही गति कर रहा है। आज मैं यही उच्चारण करने के लिए आया कि यजमान सपत्नी उनका सौभाग्य अखण्ड बना रहे, उनके जीवन में सदैव सुमति आनी चाहिए और पवित्रता की महान् देवी

उनके अन्तर्हृदय में प्रवेश की जानी चाहिए। ब्राह्मण अब्रहेः गान गाने वालों की आयु दीर्घ हो और उद्गान गाने वाला देखो, वायुमण्डल में देवताओं के आँगन में विद्यमान हो जाता है। यजमान! मैं यज्ञ की चर्चा कर रहा हूँ, वहाँ आधुनिक काल की भी तो चर्चा करूँ।

स्वार्थ

मैं बहुत पुरातन काल से गुरूदेव को इस सँसार का परिचय कराता रहता हूँ कि यह सँसार अग्नि वेदी पर आने के लिए जा रहा है। वह समय दूर नहीं रहा जब यह अग्नि के काण्ड में परणित होने जा रहा है। मैं विशेष चर्चा प्रकट करने नहीं जा रहा हूँ। केवल यह कि मैं आज सँसार के स्वार्थवाद को दृष्टिपात करके आश्चर्य कर रहा हूँ। राष्ट्रवाद में स्वार्थवाद है, प्रत्येक गृह में स्वार्थवाद है। पति-पत्नि स्वार्थी बन गए हैं। इस समाज का क्या बनेगा? इसको प्रभु ही जानता है। परन्तु मैं अपने वाक्यों में उच्चारण क्या कर सकता हूँ। केवल स्वार्थवाद ही इस समाज के विनाश का कारण बनता चला आया है परम्परा से।

यजमान को आशीर्वाद

इसीलिए प्रभु से मेरी प्रार्थना है कि हे प्रभु! तू सँसार के प्राणियों को सुमति दे और यह स्वार्थवाद समाप्त हो। मैं अपने पूज्यपाद गुरूदेव को यह वाक्य उच्चारण करके अपना विराम देता हूँ क्योंकि मैं विशेष चर्चा प्रकट ही नहीं करना चाहता। वाक्य इतना प्रिय हो रहा था पूज्यपाद का। वह विज्ञान और ज्ञान की उड़ान उड़ रहे थे। अब मैं अपने पूज्यपाद गुरूदेव से आज्ञा पाऊँगा पर इस आशीर्वाद के साथ कि यजमान का जीवन दीर्घ हो। आयु में महत्ता आए। यह सदैव मै प्रार्थना करता रहता हूँ।

मेरे पूज्यपाद! ब्रहीः कृताम्।

पूज्यपाद-गुरुदेव

मेरे पुत्र ने कुछ वाक्य कहा है। अग्नि-काण्ड की जो इन्होंने चर्चाएँ की सूक्ष्म रूप से, सँसार चलता ही है। यजमान अपने जीवन में सदैव अखण्डता को प्राप्त हो। धर्म और मानवता ही जीवन में, इस समाज में महान् बनाती रहती है। यह वाक्य आज हमारा समाप्त, अब वेदों का पठन-पाठन होगा।

वेदपाठ. . . . . .

अच्छा भगवन्! आज्ञा

आनन्द मंगलम्

ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः

दिनाँकः 8 अगस्त, 1979
समय : दोपहर 3 बजे
स्थान : लाक्षागृह, बरनावा

॥ ओ३म् ॥

ऋषियों के उद्‌गार

1. मानव के शब्दों के परमाणुओं में मानव का चित्र भी आकाश में प्रसारित होता रहता है।
2. महापुरुष के मुख से निकले सचित्र परमाणुओं का प्रभाव उसके निवास-स्थान पर पचास वर्षों तक विचरता रहता है।
3. मन और प्राण दोनों की सहकारिता, एकाग्रता ध्यानावस्था है।
4. मन से शक्तिशाली संसार में कोई वस्तु नहीं है।
5. संसार में प्रकृति का कोई सूक्ष्म तत्व है तो वह मन है।
6. मन और प्राण की एकाग्रता होने पर चित्त भी समाहित हो जाता है।
7. मन तथा प्राण के विभाजन का नाम चित्त है।
8. मन-प्राण की सहकारिता होने पर आत्मा को परमात्मा का दर्शन होता है।
9. विनीत, उदार मानव, मान अपमान को त्यागकर ही परमात्मा को प्राप्त कर सकता है।
10. हृदय को कष्ट देने वाले जो कर्म होते हैं वह मानव की मानवता को कष्ट करने वाले होते हैं। उनसे आत्मा का ह्रास होता रहता है।
11. मान अपमान ही तो मानव की मृत्यु कहलाती है।
12. प्रभु को तो वही प्राप्त होता है जो अपने में उदार, विनीत हो जाता है।
13. मोक्ष में भी जीवात्मा परमात्मा से पृथक रहता हुआ उसके परमानन्द का भोग करता है।
14. योगी उसे कहा जाता है जो देखो, अपने ब्रह्म की निष्ठा में सदैव निहित रहता है।
15. हृदय में ही उस ब्रह्म को दृष्टिपात करता है हृदय ही प्रथम का स्थान माना गया है।

योगनिष्ठ पूज्यपाद ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज (शृङ्गी ऋषि जी) की अमृतवाणी संहिता के रूप में

*1.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 1)	80.00
*2.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 2)	80.00
3.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 3)	60.00
4.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 4)	60.00
5.	यौगिक प्रवचन माला (भाग 5)	60.00
6.	Yogic Wisdom of Ancient Rishis	80.00
7.	वेद पारायण-यज्ञ का विधि विधान	25.00
8.	आत्म-लोक	35.00
9.	धर्म का मर्म	40.00
10.	शंका-निवारण	30.00
11.	यज्ञ-प्रसाद अर्थात् यज्ञ का महत्व	40.00
12.	आत्मा व योग-साधना	35.00
*13.	देवपूजा	50.00
14.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 1)	125.00
15.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 2)	125.00
16.	अतीत का दिग्दर्शन (भाग 3)	125.00
17.	रामायण के रहस्य	35.00
18.	यज्ञ एवं औषधि विज्ञान	40.00
19.	महाभारत के रहस्य	30.00
20.	अलङ्कार-व्याख्या	35.00
21.	रावण-इतिहास	50.00
22.	महाराजा-रघु का याग	30.00
23.	वनस्पति से दीर्घ-आयु	35.00
24.	मोक्ष प्राप्ति का मार्ग	35.00
25.	चित्त की वृत्तियों का निरोध	35.00
26.	आत्मा, प्राण और योग	35.00
27.	पञ्च-महायज्ञ	35.00
28.	अश्वमेघ-याग और चन्द्रसूक्त	40.00
29.	याग-मन्जूषा	40.00
30.	आत्म-दर्शन	30.00
31.	पुत्रेष्टि-याग और मातृ-दर्शन	30.00
32.	याग और तपस्या	60.00
33.	यागमयी-साधना	35.00
34.	यागमयी-सृष्टि	35.00
35.	याग-चयन	40.00
36.	दिव्य-रामकथा	120.00
37.	ज्ञान-कर्म-उपासना	35.00
38.	दिव्य-ज्ञान	40.00
*39.	महाभारत एक दिव्य दृष्टि	90.00
40.	महर्षि-विश्वामित्र का धनुर्याग	40.00
41.	आत्म-उत्थान	40.00
42.	तप का महत्व	40.00
43.	अध्यात्मवाद	40.00
44.	ब्रह्मविज्ञान	40.00
45.	वैदिक-प्रभा	35.00
46.	प्रकाश की ओर	35.00
47.	कर्तव्य में राष्ट्र	40.00
48.	वैदिक-विज्ञान	35.00
49.	धर्म से जीवन	35.00
50.	आत्मा का भोजन	40.00
51.	साधना	35.00
52.	त्रेताकालीन-विज्ञान	40.00
53.	यज्ञोमयी-विष्णु	40.00
54.	यौगिक प्रवचन माला भाग-6	80.00
55.	स्वर्ग का मार्ग	40.00
*56.	यौगिक प्रवचन माला भाग-7	80.00
57.	माता मदालसा	50.00
58.	यौगिक प्रवचन माला भाग-8	80.00
59.	यौगिक प्रवचन माला भाग-9	80.00
60.	यौगिक प्रवचन माला भाग-10	80.00
61.	याग एक सर्वाङ्ग पूजा	80.00
62.	यौगिक प्रवचन माला भाग-11	80.00
*63.	यौगिक प्रवचन माला भाग-12	80.00
64.	मानव कल्याण की चर्चाएं	50.00
65.	प्रभु-दर्शन	50.00
*66.	यौगिक प्रवचन माला भाग-13	80.00
67.	समाज उत्थान का मार्ग	50.00
*68.	यौगिक प्रवचन माला भाग-14	80.00
*69.	ब्रह्म की ओर	50.00
70.	ईश्वर मिलन	50.00
71.	यौगिक प्रवचन माला भाग-15	80.00

*सहजिल्द का मूल्य 20 रु. अतिरिक्त है।

विशेष सूचना

वैदिक अनुसन्धान समिति की साधारण-सभा का आयोजन

वैदिक अनुसन्धान समिति के सभी आजीवन सदस्यों को एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि समिति की नई कार्यकारिणी के चयन के लिए **साधारण सभा दिनाँक 11-9-2016** दिन रविवार को, **आर्य समाज मन्दिर, मालवीय नगर, दिल्ली-110017** में प्रातः 11.00 बजे आयोजित होगी।

सभा में विचारणीय विषय है–

1. पिछले वर्ष के आय-व्यय की समीक्षा और नए वर्ष के अनुमानित आय-व्यय पर विचार।
2. नई कार्यकारिणी का गठन।

अन्य विचार-विनिमय सभापति की अनुमति से।

विशेष–सभा के आरम्भ समय अर्थात् 11.00 बजे सदन में सदस्य संख्या (कोरम) के अभाव में सभा एक घण्टे के लिए स्थगित की जाएगी। और पुनः उसी तिथि और स्थान पर उसी एजेन्डा के साथ अपराह्न 12.00 बजे विहित कार्यक्रमार्थ सम्पन्न होगी।

मन्त्री

वैदिक अनसुन्धान समिति

मासिक सहयोग

श्री हरीराम गुप्ता, केसर स्टील, वजीरपुर, दिल्ली	1000 रुपये
श्री चिंतामणि त्यागी एवं श्री जगमोहन त्यागी बरला, मुजफ्फरनगर	1000 रुपये
श्री संजीव त्यागी (दिनकरपुर) फरीदाबाद, हरियाणा	1000 रुपये
श्री अरुण त्यागी, राजनगर, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	500 रुपये
श्री विनोद त्यागी सुपुत्र श्री जयप्रकाश त्यागी मकनपुर, गाजियाबाद	500 रुपये
मा. कार्तिक त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
मा. लोमश त्यागी सुपौत्र श्री रामनिवास त्यागी ग्राम भंगेल, नोएडा	251 रुपये
डॉ. शुचि, डॉ. राजीव चावला, आणद, गुजरात	250 रुपये
श्री राकेश शर्मा, विराट नगर, पानीपत, हरियाणा	250 रुपये
श्री कृष्ण लाल बत्रा, इन्द्री, जिला करनाल	201 रुपये
मास्टर कवन्धि, रामप्रस्थ, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश	101 रुपये
मास्टर सिद्धार्थ, अँकुर अपार्टमैन्ट, दिल्ली	101 रुपये
मास्टर अभ्युदय त्यागी, न्यू जर्सी, अमेरिका	101 रुपये

नम्र-निवेदन

पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज ने अपने प्रवचनों में वेदमन्त्रों का गान करते हुए उनकी प्रचलित भाषा में व्याख्या की है। उसी अमृत वाणी को जनकल्याण के लिए ''सँहिता'' रूप में प्रकाशित करने के लिए वैदिक अनुसन्धान समिति सभी श्रद्धालु एवम् दानदाताओं से सहयोग के लिए आह्वान करती है जिससे कि प्रकाशन का कार्य सुचारू रूप से ऊर्ध्वा गति को प्राप्त होता रहे। सहयोग की राशि समिति के बैंक खाते में स्वेच्छानुसार भेजने के लिए बैंक का विवरण निम्न प्रकार से है :-

वैदिक अनुसन्धान समिति (पञ्जी.)

पंजाब नैशनल बैंक, खान मार्केट, नई दिल्ली

बैंक खाता नं. - 0149000100229389, IFSC Code – PUNB–0014900

website : www.shringirishi.in

Email : contact@shringirishi.in

योगमुद्रा में प्रवचन करते हुए पूज्यपाद गुरुदेव ब्रह्मर्षि कृष्णदत्त जी महाराज

उद्‌बोधन

आज नास्तिक तो यह कह रहा है कि जिसे, महादेव पुकारा जा रहा है। वह क्या पदार्थ है। वह इस आत्मा से जाना जाएगा। वह महादेव ऐसा पदार्थ नहीं जिसको हम तुमको स्पष्ट निर्णय करा दें। परन्तु समक्ष देखना है तो पूर्व तू अपने को जान और अपने को देख कि मैं कौन हूँ और कैसा हूँ। मैं आज जब अपने नेत्रों को नहीं देख सकता, तो उसको कैसे देख सकता हूँ। बिना विज्ञान के, बिना प्रकाश के जब मेरे में इतना प्रकाश नहीं कि मैं अपने नेत्रों को ही देख सकूँ, और आज हम उस महादेव को देखना चाहते हैं। वह महादेव तो उस महान अनुपम की कृपा से देखा जाएगा, जब तुम्हारा आत्मिक बल चढ़ जाएगा। मानवता विज्ञान के शिखर पर पहुँच जाएगी। तो हम आध्यात्मिक विज्ञान के शिखर पर पहुँच जाएँगे।

पूज्यपाद-गुरुदेव